# अष्टकवर्ग से कुंडली मिलान

## बृहत्पराशरहोराशास्त्रम, समुदायाष्टकवर्गाध्याय के अनुसार

डॉ. सुशील अग्रवाल

जो राशि अष्टकवर्ग से शुद्ध हो, वह सभी शुभ कार्यों के लिए शुभ होती है। सभी कार्यों के लिए अष्टकवर्ग शुद्धि देखनी चाहिए। जो राशि अष्टकवर्ग से शुद्ध नहीं हो, केवल उसी की गोचर शुद्धि देखनी चाहिए। जो राशि अष्टकवर्ग से शुद्ध हो, उसके लिए गोचर शुद्धि का विचार करने की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि अष्टकबल शुद्धि प्रबल होती है। अतः अष्टकवर्ग शुद्धि होने से गोचर का विचार निष्फल हो जाता है।

इस लेख में अष्टकवर्ग पद्धति से शुद्धि करते हुए जानेंगे कि वर के लिए वधू किस लग्न की होनी चाहिए या वधू के लिए वर किस लग्न का होना चाहिए। इस विधि को समझने के लिए निम्न पुरुष की कुंडली लेते हैं :

पुरुष : 12–फरवरी–1965, 7:30 बजे, दिल्ली।

चन्द्र 5–17 मृगशिरा नक्षत्र –स्वामी मंगल

**नियम–1** : सर्वप्रथम वर की कुंडली और चन्द्र भिन्नाष्टक वर्ग तैयार करें :

जिन–जिन राशियों में चन्द्र के

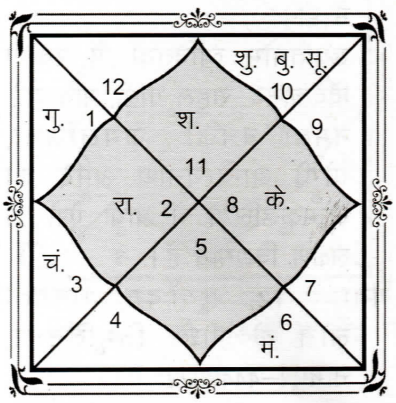


चंद्र

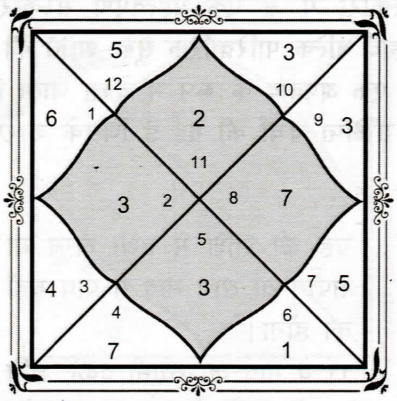


भिन्नाष्टक वर्ग में 4 से अधिक शुभ बिन्दु हैं, वह राशि कन्या का लग्न हो तो कन्या की कुंडली का वर के लिए मिलान ठीक है। उपरोक्त कुंडली में मेष और तुला में क्रमशः 6 और 5 शुभ बिन्दु हैं। अतः यदि वधू का लग्न मेष या तुला होगी तो वर के लिए उचित है।

इसी प्रकार, वधूं की कुंडली से भी वर का उचित लग्न ज्ञात करें। दोनों से लग्न राशि का मिलान होने पर कुंडली मिलान मानना चाहिए।

**द्वितीय विधि :** वर का चन्द्र जिस राशि में स्थित होता है, उसे नोट करें। वधू के सर्वाष्टक वर्ग में उस राशि (वर की चन्द्र राशि) के शुभ बिन्दु यदि 28 से अधिक हैं तो वर के लिए कन्या ठीक है। इसी प्रकार वधू का चन्द्र जिस राशि में स्थित होता है, उसे नोट करें। वर के सर्वाष्टक वर्ग में उस राशि (वधू की चन्द्र राशि) के शुभ बिन्दु यदि 28 से अधिक हैं तो वधू के लिए वर ठीक है।

**तृतीय विधि :** वर का चन्द्र जिस राशि में स्थित होता है, उसे नोट करें। वधू के भिन्नाष्टक वर्ग में उस राशि (वर की चन्द्र राशि) के शुभ बिन्दु यदि 4 से अधिक हैं तो वर के लिए कन्या ठीक है। इसी प्रकार वधू का चन्द्र जिस राशि में स्थित होता है, उसे नोट करें । वर के भिन्नाष्टक वर्ग में उस राशि (वधू की चन्द्र राशि) के शुभ बिन्दु यदि 4 से अधिक हैं तो वधू के लिए वर ठीक है।

पता : बी– 301, सोम अपार्टमेंट्स, सेक्टर–6, द्वारका, नयी दिल्ली
मो. 9810162371

**नियम – 2 :** कुंडली और चन्द्र के भिन्नाष्टक से निम्न राशियाँ ज्ञात करें :

| क्रम | पैरामीटर | राशि संख्या | चन्द्र के ठट में शुभ बिन्दु |
|---|---|---|---|
| 1. | चन्द्र की राशि | 3 | 4 |
| 2. | चन्द्र के नक्षत्रेश मंगल की राशि | 6 | 1 |
| 3. | सप्तम भाव की राशि | 5 | 3, |
| 4. | सप्तमेश सूर्य की राशि और उसकी त्रिकोण राशियाँ | 10, 2, 6 | 3, 3, 1 |
| 5. | सप्तमेश सूर्य की नीच और उच्च राशि | 7, 1 | 5, 6 |
| 6. | शुक्र की राशि और उसकी त्रिकोण राशियाँ | 10, 2, 6 | 3, 3, 1 |

# गीता सार : सीढ़ियों के उस पार

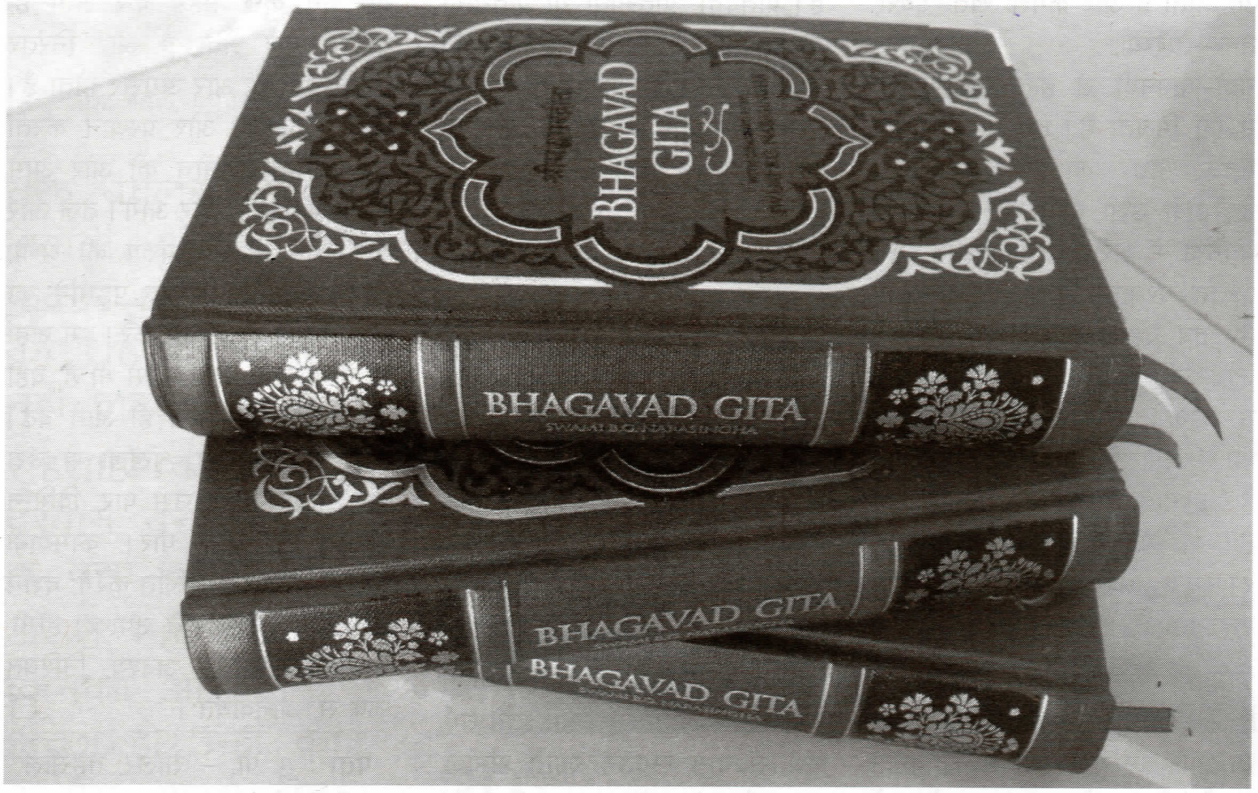


गौतम सिंह पटेल

''देहिनोऽस्मिन् यथा देहे कौमारं यौवनं जरा।

तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुहयति।।''

'श्रीमद्भगवद्गीता–2/13

जैसे जीवात्मा की इस देह में बाल्यावस्था, युवावस्था और वृद्धावस्था होती है, वैसे ही अन्य शरीर की प्राप्ति होती है; उस विषय में धीर पुरुष मोहित नहीं होता।

यहां केवल जीवात्मा, देह, बाल्यावस्था, युवावस्था, वृद्धावस्था और शरीर के स्थान पर क्रमशः विद्यार्थी, प्रमाणपत्र, उच्चतर माध्यमिक शाला, स्नातक महाविद्यालय, स्नातकोत्तर महाविद्यालय और पद को स्थापित करना है। अतएव निष्कर्ष यह है कि जैसे विद्यार्थी जीवन के इन प्रमाणपत्रों में उच्चतर माध्यमिक शाला, स्नातक महाविद्यालय, स्नातकोत्तर महाविद्यालय के प्रमाणपत्र होते हैं, वैसे ही अन्य पद की प्राप्ति होती है; उस विषय में धीर पुरुष मोहित नहीं होता।

''पूर्वे वयसि तत् कुर्याद् येन वृद्धः सुखं वसेत्।

यावज्जीवेन तत् कुर्याद् येन प्रेत्य सुखं वसेत्।।''

–महाभारत, उद्योगपर्व–35/68

प्रथम अवस्था में वह काम करें, जिससे वृद्धावस्था में सूखपर्वक रह सकें और जीवन भर वह कार्य करें, जिससे मरण उपरांत भी परलोक में सुख–शांति के साथ रह सकें।

विष्णुस्मृति– 20/49 में भी स्पष्ट किया गया है कि मानव–प्राणी जीवन और मरण की एक श्रृंखला में से गुजरकर अपने–आप को अमरता के योग्य बना लेता है। शरीर में होने वाले परिवर्तनों का अर्थ आत्मा में परिवर्तन नहीं है। इसके द्वारा धारण किए गए शरीरों में से कोई भी नित्य नहीं है।

विषयान्तर्गत मात्र उदाहरणार्थ कुछ समय के लिए मेंढक को आत्मा और विभिन्न जलाशयों को भिन्न–भिन्न

शरीर मान लें। कुएं का एक मेंढक वर्षा ऋतु में जब कुएं का जलस्तर बढ़ जाता है, तब वह कुएं से बाहर आ जाता है और क्रमशः खेत–डबरी, ताल–तलैय्या, नहर–नार, नदी–महानदी से होता हुआ समुद्र में जा मिलता है। तब वह कुएं का मेंढक सागर का मेंढक कहलाता है। ठीक उसी भांति आत्मा विभिन्न योनियों में शरीर धारण करता हुआ अन्ततः परमात्मा में विलीन हो जाता है। तब वह इस लोक की विभिन्न जीव–जंतु अथवा मानवीय–आत्मा गोलोक / विष्णुलोक / शिवलोक की परमात्मीय आत्मा कहलाता है, परमात्मा का पार्षद कहलाता है। या यों कहें कि परमात्मामय / राममय / कृष्णमय / शिवमय कहलाता है।

आज हम बाल्यावस्था से युवावस्था में हैं और आगे वृद्धावस्था में चले जायेंगे या आज हम युवावस्था से वृद्धावस्था में हैं और आगे जरावस्था में चले जायेंगे अथवा आज हम वृद्धावस्था से जरावस्था में हैं और आगे मरणावस्था में चले जायेंगे। ऐसे ही हम पुनः–पुनः विभिन्न योनियों में जन्म लेते रहेंगे, खाक होते रहेंगे अथवा शरीर धारण करते और मरते–मिटते रहेंगे, लेकिन ध्यान रहे पात्रतानुसार। यही गति हमारी रही है और यही गति हमारी आगे भी रहेगी, जब तक हम सीढ़ियों के उस पार न पहुंच जायं। बारंबार यही जनम–मरण, पुनः–पुनः पुनर्जन्म–पुनर्मरण।

लेकिन हमारा गर्भाशय, हमारा मातृत्व, हमारा कुल–खूंट, हमारा देश–काल और परिस्थिति, हमारी जाति–धर्म और मानसिकता, हमारी पढ़ाई–लिखाई और विद्वत्ता, हमारी योग्यता, हमारी श्रेणी अथवा हमारी सीढ़ी पृथक–पृथक होगी। विद्यार्थी श्रेणी सुधार का अभिप्राय जानते हैं। प्रतिद्वंद्वी, प्रतिस्पर्धी या प्रतियोगी योग्यता सुधार का अर्थ समझते हैं। दर्शनार्थी सीढ़ी सुधार का अभिप्राय बूझते हैं। हम भी जानें, हम भी समझें, हम भी बूझें।

हमें इसी धरातल को साफ–सुथरा, स्वच्छ और सुंदर बनाने का भरसक प्रयास करना चाहिए, क्योंकि हमें पुनः इसी धरातल पर जन्म लेना है। हमें इसी मातृत्व की पर्याप्त सेवा–सुश्रुषा करनी चाहिए, क्योंकि हमें पुनः इसी मातृत्व के माध्यम से इस धरातल पर आना है। हमें इसी विद्यालयीन, कार्यालयीन, कर्मालयीन, चिकित्सालयीन, न्यायालयीन प्रक्रिया में सुधार लाना है, क्योंकि हमें पुनः इन्हीं प्रक्रियाओं / पद्धतियों / व्यवस्थाओं का चक्कर काटना है। हमें इसी धर्म, पंथ, संप्रदाय, संगठन, जाति, समाज, वाद और तंत्र को स्वस्थ, सुंदर और मनभावन बनाना है क्योंकि हमें पुनः इन्हीं मान्यताओं से होकर गुजरना है। हमें केवल और केवल कर्त्तव्य कर्म ही करना चाहिए, ताकि हमारा पुनर्जन्म अनिवार्यतः कर्त्तव्य परायण लोक में ही हो सके।

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं– धीर पुरूष यह तत्त्व जानते हैं। प्रशांत मन, स्थिर बुद्धि, स्वस्थ चित्त, सौम्य विवेक, दृढ़ संकल्प और सकारात्मक सोच, समझ व विचारवान व्यक्ति को धीर पुरुष कहा गया है। विषयान्तर्गत धीर पुरुष मोहित नहीं होते, भ्रमित नहीं होते, व्यथित नहीं होते, भयभीत नहीं होते। वे थरथराते नहीं, घबराते नहीं, आकुल–व्याकुल नहीं होते, शोकाकुल नहीं होते। जिसके पास धैर्य होता है उसकी मनोवृत्तियां प्रशांत रहती हैं, उसकी बुद्धि स्थिर रहती है, उसका दृढ़निश्चय नहीं डोलता। वह सब कुछ सहन कर लेता है, बर्दाश्त कर लेता है और निरंतर प्रगति पथ की ओर अग्रसर होता है। विकासवाद की ओर प्रस्थान करता है। रचनात्मक सोच की ओर आगे बढ़ता है। आगे, और आगे। तेज और तेज। हम भी धीर पुरुष की श्रेणी, स्तर अथवा सीढ़ी तक पहुंचाने का कम से कम प्रयास तो करें। हम जहां भी हैं, जितना भी हैं, जैसे भी हैं, वहीं से उतने से ही, वैसे ही आगे बढ़ें। श्रेणी से उस पार, शृंखला से उस पार, पायदानों से उस पार, विभिन्न सीढ़ियों से उस पार। कामयाबी मिलेगी, सफलता अर्जित करेंगे, दर्शन लाभ होगा, परम गति उपलब्ध होगी, भगवत्प्राप्ति होगी। अवश्य, निश्चित रूप से, अनिवार्यतः। ❐

**पता :** मु. पो. – सालर, तहसील सारंगढ़, जिला–रायगढ़, छत्तीसगढ़, पिन– 496445

**राजेश्वर दाती जी महाराज**

वशीकरण, ऊपरी बाधा, काम बंधन खोलना, पितृ दोष, कालसर्प दोष शांति, ग्रह बाधा शांति, तांत्रिक अनुष्ठान, जाप, हवन तथा कर्मकांड एवं महामृत्युंजय एवं गायत्री जाप के लिए संपर्क करें।

**फोन :** 9212120817, ए–32–ए, जवाहर पार्क, देवली रोड, नयी दिल्ली–62